

9-प्रज्ञावतार की विस्तार प्रक्रिया

अध्याय 1: युगसन्धि—महान परिवर्तन की बेला (स्रोत अनुच्छेद:,,,,,,)

1. प्रश्न: 'प्रज्ञावतार की विस्तार प्रक्रिया' के अनुसार वर्तमान युग की प्रमुख समस्या क्या है और इसका समाधान कैसे संभव है?
2. उत्तर: वर्तमान युग की प्रमुख समस्या अतिवादी अवांछनीयता है, जो अधिकांश लोगों द्वारा अचिंत्य चिन्तन और न करने योग्य क्रियाकृत्य अपनाने का परिणाम है। यदि यह बहुमत सकारात्मक दिशा में उलट जाए, तो परिस्थितियाँ बदलने में क्षण मात्र की भी देर नहीं लगेगी। इस परिवर्तन के लिए 'युगसन्धि महापुरश्चरण' नामक एक दैवी योजना अवतरित हुई है, जिसका लक्ष्य युग परिवर्तन के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करना है।
3. प्रश्न: मत्स्यावतार की कहानी का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है और इसका इक्कीसवीं सदी के आंदोलन से क्या संबंध है?
4. उत्तर: मत्स्यावतार की कहानी का उल्लेख एक छोटे से आरम्भ से विशालकाय विस्तार के संदर्भ में किया गया है। ब्रह्मा जी के कमण्डल में एक छोटे कीड़े से मत्स्यावतार का विकास हुआ जिसने समूचे भूमण्डल को लपेट लिया। इसी प्रकार, इक्कीसवीं सदी का विशालकाय आंदोलन एक छोटे से शान्तिकुञ्ज आश्रम से प्रकट होकर भारत ही नहीं, समूचे विश्व को आश्रय देगा, और विकृत विचारों को परिष्कृत करेगा।
5. प्रश्न: 'युगसन्धि महापुरश्चरण' क्या है और इसका मुख्य उद्देश्य क्या है?
6. उत्तर: 'युगसन्धि महापुरश्चरण' एक सुनियोजित दैवी योजना है जो युगपरिवर्तन के लिए उपयुक्त वातावरण एवं परिवर्तन प्रस्तुत करने के एकमात्र संकल्प व लक्ष्य के साथ अवतरित हुई है। इसका उद्देश्य दो करोड़ प्रतिभाओं को यजमान के रूप में शामिल करके एक अभूतपूर्व महापूर्णाहुति सम्पन्न करना है। यह महाभियान महान परिवर्तन की बेला है, जिसमें जाग्रत लोगों को जुड़कर इस पुण्य वेला का लाभ उठाना चाहिए।
7. प्रश्न: 'युगसन्धि महापुरश्चरण' की योजना में क्या परिवर्तन किए गए हैं और क्यों?
8. उत्तर: प्रारम्भ में एक लाख दीपयज्ञों में एक करोड़ प्रतिभाओं को यजमान के रूप में सम्मिलित करने का लक्ष्य था, जिसे सन् 2000 तक पूरा करना था। लोगों की श्रद्धा और आतुरता को देखते हुए, इसे दूना कर दिया गया है। अब सन् 2000 तक पाँच-पाँच वर्षों में दो करोड़ भागीदार बनाने का लक्ष्य है, जिसमें दो लाख दीप यज्ञ शामिल होंगे। इससे कम समय में अधिकाधिक प्रतिफल मिलेगा।
9. प्रश्न: 'युगसन्धि महापुरश्चरण' के आयोजन स्थल को लेकर क्या बदलाव आया है और इसका क्या लाभ है?
10. उत्तर: आरम्भ में यह आयोजन हरिद्वार या प्रयाग के कुम्भ पर्व पर एक ही स्थान पर सभी भागीदारों को एकत्रित करके सम्पन्न करने का विचार था। परन्तु अब लाखों लोगों को अपने-अपने समीपवर्ती केन्द्रों में एकत्रित होने की सुविधा मिलेगी। इससे दूर आने-जाने का किराया-भाड़ा खर्च नहीं होगा और ठहरने व भोजन की व्यवस्था भी आसानी से हो सकेगी, जिससे महाप्रयास की जानकारी व्यापक क्षेत्र में पहुँच सकेगी।
11. प्रश्न: 'युगसन्धि महापुरश्चरण' के पीछे मौलिक श्रेय किसका है और शान्तिकुञ्ज के संचालकों की

क्या भूमिका है?

12. उत्तर: इस महाप्रयोजन का मौलिक श्रेय महाकाल की महाशक्ति को है, जिसने मनुष्य की सीमित शक्ति से न बन सकने वाले कार्यों को करने की प्रेरणा दी है। शान्तिकुञ्ज के संचालकों ने केवल जानकारी पहुँचाने और आवश्यक व्यवस्था जुटाने का कार्य अपने कंधों पर लिया है। महाकाल ही इस प्रयोजन को पूर्ण करेगा, क्योंकि युगपरिवर्तन का नियोजन भी उसी का है।

अध्याय 2: प्रयोजन के अनुरूप दायित्व भी भारी (स्रोत अनुच्छेद:,,,,,)

1. प्रश्न: 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के माध्यम से निर्मित 'प्रज्ञा परिवार' की पहचान और सदस्य संख्या क्या है?
2. उत्तर: 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के माध्यम से निर्मित 'प्रज्ञा परिवार' इक्कीसवीं सदी के उत्कृष्ट आदर्शवादी मोर्चे पर जुझारू स्तर पर लड़ने वाले प्रचण्ड योद्धाओं का परिवार है। इस परिवार में 'अखण्ड ज्योति' हिन्दी मासिक तथा अन्य भाषाओं में उसके संस्करणों के स्थाई सदस्यों की संख्या प्रायः पाँच लाख है। ये सदस्य विगत पचास वर्षों से मिशन से जुड़े हुए हैं और उन्हें परिवार के सदस्य माना जाता है।
3. प्रश्न: महाभारत और सिख धर्म के उदाहरणों से क्या संदेश दिया गया है?
4. उत्तर: महाभारत में कृष्ण का प्रयोजन पूरा करने के लिए केवल पाँच पाण्डव ही आगे रहे, और सिख धर्म में भी 'पंच प्यारे' प्रसिद्ध हैं। इन उदाहरणों से यह संदेश दिया गया है कि बड़े और भारी दायित्वों को पूरा करने के लिए हर किसी से बड़ी आशा नहीं की जा सकती है, बल्कि कुछ विशेष और समर्पित लोग ही निर्णायक भूमिका निभाते हैं। पाँच लाख सदस्यों में से यदि एक लाख भी कदम से कदम मिलाकर चल सकें, तो यह बहुत बड़ी बात होगी।
5. प्रश्न: मनुष्य के मनोबल को असाधारण क्यों कहा गया है? उदाहरण देकर समझाइए।
6. उत्तर: मनुष्य शरीर पाँच तत्वों का बना होता है और शारीरिक दृष्टि से उसमें सीमित सामर्थ्य होती है। परंतु उच्चस्तरीय मनोबल केवल मनुष्य को ही प्राप्त है, जिसके बल पर वह संसार को हिला देने वाले काम कर सकता है। महात्मा गाँधी, ५ फीट २ इंच और ९६ पौंड वजन के होते हुए भी, अपने मनोबल से महान कार्य कर सके। बुद्ध और परशुराम जैसे व्यक्तियों की गणना भी इसी श्रेणी में होती है।
7. प्रश्न: दैवी चेतना का विशेष अनुग्रह मनुष्य को क्या प्रदान करता है और इसकी प्राप्ति कैसे होती है?
8. उत्तर: दैवी चेतना का विशेष अनुग्रह मनुष्य को असाधारण मनोबल प्रदान करता है, जिससे वह प्रवाह को उलट सके और वातावरण को नए ढाँचे में बदल सके। यह मनोबल साधारण कायिक पुरुषार्थ से भिन्न होता है, जिसके बल पर व्यक्ति केवल शारीरिक आवश्यकताएँ ही पूरी कर पाता है। इस प्रकार की उपलब्धि प्राप्त करने के लिए आदर्शवादी पुरुषार्थ करने पड़ते हैं, जो केवल शारीरिक सुविधा तक सीमित न होकर पुण्य-परमार्थ जैसे अभ्यासों में अपना प्रयोजन सिद्ध कर सकें।
9. प्रश्न: विश्व का नवनिर्माण करने के लिए किन चीजों की आवश्यकता है?
10. उत्तर: एक छोटा-सा घर बनाने के लिए भी समय, श्रम और पैसा लगता है, तो विश्व का नवनिर्माण करने के लिए बहुत अधिक मनोबल, श्रम और साधन चाहिए। इतना वर्चस्व किसी मनुष्य-तनधारी में नहीं हो सकता, इसके लिए ईश्वरीय आत्मबल और सुसंस्कारित मनोबल की बहुत बड़ी मात्रा चाहिए। इसकी प्राप्ति के लिए आदर्शों का निष्ठापूर्वक परिपालन, आस्तिकता, आध्यात्मिकता और धार्मिकता में गहरी आस्था आवश्यक है।

अध्याय 3: कुछ अतिरिक्त पूछ-ताछ (स्रोत अनुच्छेद:,,,,,,)

1. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए किस प्रकार की प्रतिभा की आवश्यकता है?
2. उत्तर: इक्कीसवीं सदी की चुनौतियाँ अनेकानेक हैं, जैसे नदी का बहाव या हवा का रुख बदलना। इन कठिनाइयों से पार पाने के लिए मनुष्य की प्रतिभा असाधारण होनी चाहिए। साधारण योग्यता वाले के लिए ऐसा करना दुस्साहस और जोखिम भरा होगा। इसके लिए संचित सुसंस्कारिता, प्रतिभा और तप-सम्पदा आवश्यक है, क्योंकि हर कोई हर क्षमता से संपन्न नहीं होता, जैसा हनुमान और अर्जुन के उदाहरण से स्पष्ट है।
3. प्रश्न: 'अखण्ड ज्योति' के परिवार के सदस्यों को साधारण लोगों से अलग क्यों माना जाता है?
4. उत्तर: 'अखण्ड ज्योति' के परिवार के सदस्यों को सामान्य लोगों की तुलना में असामान्य समझते हुए ही एकत्रित किया गया है। उनका आकर्षण उथले साहित्य में न होकर उत्कृष्टता में है। यह भीड़ आकस्मिक नहीं है, बल्कि इसके पीछे कुछ रहस्यमय कारण और संचित सुसंस्कारिता तथा विलक्षणता काम कर रही है, जिसने उन्हें अपने आकर्षण केंद्र से जोड़ा है। यह एक विशेष उद्देश्य के लिए विशिष्ट परिजनों का समुच्चय है।
5. प्रश्न: 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के पाठकों को बलिष्ठ योद्धाओं का समूह क्यों कहा गया है?
6. उत्तर: 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के पाठकों को किसी बड़े मोर्चे पर जूझने वाले बलिष्ठ योद्धाओं का परिकर कहा गया है। वे अनेक परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते-होते इस शक्तिशाली अक्षौहिणी में एकत्रित हुए हैं। उन्हें विशेष क्षमता संपन्न मधुमक्खियों की तरह रानी मक्खी के अनुशासन में रहने के लिए खिंचा हुआ बताया गया है। यह परिवार इक्कीसवीं सदी के उत्कृष्ट आदर्शवादी मोर्चे पर लड़ने वाला है, जिसकी ट्रेनिंग लंबे समय से हो रही है।
7. प्रश्न: 'अखण्ड ज्योति' परिवार के सदस्यों की विशिष्टता जानने के लिए कौन से आधार संकलित किए जा रहे हैं और उनका उद्देश्य क्या है?
8. उत्तर: परिजनों की विशिष्टता आँकने और उन्हें मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए तीन दिव्य आधार संकलित किए जा रहे हैं: (१) जन्म तिथि, स्थान तथा समय, (२) वर्तमान समय का फोटो, और (३) हस्तरेखाओं का अंकन। इनका उद्देश्य भविष्य-फल बताना नहीं, बल्कि इस आधार पर परिजनों की विशिष्टता का आकलन करना है, ताकि उन्हें उनके विशिष्ट योगदान के लिए संकेत और मार्गदर्शन दिया जा सके।

अध्याय 4: दैवी सहायता भी अपेक्षित (स्रोत अनुच्छेद:,,,,,,)

1. प्रश्न: मनुष्य के पुरुषार्थ के साथ-साथ दैवी सहायता की आवश्यकता कब और क्यों पड़ती है?
2. उत्तर: मनुष्य के पुरुषार्थ, ज्ञान और सूझ-बूझ का महत्त्व है, जिससे वह प्रगति करता है। परंतु कभी-कभी किन्हीं दूसरे समर्थों की सहायता से रुकी हुई गाड़ी चलने लगती है और कठिनाइयों का दबाव हल्का हो जाता है। व्यापार में पूँजी की कमी होने पर बैंक से सहायता मिलने या लॉटरी लगने जैसे अकस्मात् लाभ को भी दैवी अनुग्रह माना जाता है, जिससे प्रयास से बढ़कर लाभ मिल सकता है।
3. प्रश्न: क्या मनुष्य के जीवन में सब कुछ पुरुषार्थ का ही फल होता है, या 'अपवाद' भी संभव हैं?
4. उत्तर: नहीं, मनुष्य के जीवन में सब कुछ केवल पुरुषार्थ का फल नहीं होता। यद्यपि प्रयास और परिश्रम अपनी भूमिका निभाते हैं, फिर भी कई बार बिना प्रयास या कम प्रयत्न से भी बड़े लाभ मिल जाते हैं।

इसी तरह, किसान के उदाहरण से स्पष्ट है कि कड़ी मेहनत के बावजूद, प्राकृतिक आपदाएँ (जैसे अतिवृष्टि, अनावृष्टि) उसकी संभावनाओं को उलट सकती हैं। अप्रत्याशित परिणामों को दैवी कृपा या भाग्य का फेर भी कहते हैं, जो अपवाद स्वरूप होते हैं।

5. प्रश्न: संसार में 'अनायास' या 'आकस्मिक' घटनाओं के पीछे क्या कारण बताए गए हैं?
6. उत्तर: वस्तुतः संसार में 'अनायास' नाम की कोई चीज़ नहीं है; सृष्टि के नियमों की अकाट्यता प्रसिद्ध है। आकस्मिक लाभ और हानि के पीछे अक्सर भाग्य का फेर कहा जाता है, पर इसके पीछे पूर्व जन्मों के संग्रहित संस्कार समयानुसार फलित होते हैं। इसके समुचित विधान को न जान पाने के कारण ही उसे भाग्य कह दिया जाता है। 'उदार अनुदान' भी ऐसी आकस्मिक सहायताओं की श्रेणी में आता है, जिसका एक व्यवस्थित आधार होता है।
7. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी में किस प्रकार के 'दुहरे कारोबार' बड़े रूप में चलेंगे और उनका उद्देश्य क्या है?
8. उत्तर: इक्कीसवीं सदी में दोहरे कारोबार बड़े रूप में चलेंगे। पहला, जो अवांछनीयताएँ छाई हुई हैं, उन्हें उलट देना, ताकि संकटों को निरस्त किया जा सके। दूसरा, नव-निर्माण की दृष्टि से बहुत कुछ किया जाना है और क्षतिपूर्ति के लिए विशालकाय कारोबार खड़े किए जाने हैं। इन दोनों उद्देश्यों को पूरा करने के लिए प्रचुर पूँजी, सूझ-बूझ और साधन-सामग्री चाहिए, जो बैंक जैसे समर्थ माध्यम से उधार लेनी पड़ेगी।

अध्याय 5: भगवान के विशेष अनुग्रह और अनुदान की उपलब्धि (स्रोत अनुच्छेद:.....)

1. प्रश्न: शरीर और प्राण के बीच क्या अंतर है और 'प्राणवान' व्यक्ति किन्हें कहा जाता है?
2. उत्तर: शरीर पंचतत्वों का बना है और जड़ है, जबकि चेतना ही उसमें प्राण का रूप है। प्राण वायु की तरह व्यापक और अनंत है। जो लोग प्राणायाम जैसी कलाओं से प्राण-शक्ति को अतिरिक्त मात्रा में ग्रहण करते हैं और उसे आवश्यकतानुसार विशेष समय पर प्रयोग करते हैं, वे ही 'प्राणवान' कहलाते हैं। ऐसे लोग अपने और दूसरों का भला करते हैं, क्योंकि उनकी चेतना विशेष रूप से सक्रिय होती है और चमत्कार स्तर के काम करती देखी जाती है।
3. प्रश्न: 'शक्तिपात' क्या है और इसका मनुष्य की क्षमताओं से क्या संबंध है?
4. उत्तर: 'शक्तिपात' ऐसे प्रयोगों को कहा जाता है जहाँ एक समर्थ व्यक्ति अपनी दिव्य क्षमता का एक भाग दूसरे को देकर उसकी सहायता कर सकता है। प्राण देवता है और उसकी असीम मात्रा विश्व-ब्रह्माण्ड में भरी पड़ी है, जो एक से दूसरे में प्रवेश करके अपनी दिव्य क्षमता का हस्तांतरण कर सकती है। इससे मनुष्य में अतीन्द्रिय क्षमताएँ प्रकट हो सकती हैं और वह असाधारण कार्य कर सकता है, जैसा आदि शंकराचार्य की कथा में मिलता है।
5. प्रश्न: भगवान् किन्हें विशेष कार्यों के लिए चुनते हैं और ऐसे व्यक्ति सामान्य मनुष्यों से कैसे भिन्न होते हैं?
6. उत्तर: भगवान् जिन्हें विशेष कार्यों के लिए चुनते या नियुक्त करते हैं, उनमें दिव्य प्राण की मात्रा अधिक होती है। इस प्राण के सहारे वे सामान्य मनुष्यों की परिधि से ऊपर उठकर सोच सकते हैं, साहस कर सकते हैं और उच्च आदर्श प्रस्तुत कर सकते हैं। सामान्य मनुष्य भू-बन्धनों से जकड़े होने के कारण ऐसा नहीं सोच पाते और उन्हें छोटे विघ्न भी पहाड़ जैसे भारी दिखते हैं, जबकि भगवान् द्वारा चुने गए लोग अतिरिक्त आत्मबल का परिचय देते हैं।

7. प्रश्न: दैवी अनुग्रह के संबंध में लोगों की क्या भ्रांतियाँ हैं और वास्तविक दैवी अनुग्रह का चिह्न क्या है?
8. उत्तर: लोग अक्सर छोटी-मोटी संयोगवश उपलब्धियों या मनोकामनाओं की पूर्ति को दैवी अनुकम्पा मान लेते हैं। उनके लिए हर सफलता दैवी अनुग्रह और हर असफलता दैवी प्रकोप होती है। परंतु वास्तविक दैवी अनुग्रह का एक ही चिह्न है: आदर्शवादिता की दिशा में साहसपूर्वक बड़े कदम उठाना और उस प्रयास में आने वाली कठिनाइयों को हँसते-हँसते दरगुजर कर देना। भगवान् का अनुग्रह उन्हीं पर बरसता है जो ऐसे सत्कर्म करने का साहस रखते हैं।
-

अध्याय 6: पात्रता की तात्कालिक आवश्यकता (स्रोत अनुच्छेद:,,,,,,)

1. प्रश्न: मनुष्य की दुर्बुद्धि किस प्रकार उसके लिए समस्याएँ उत्पन्न करती है, जबकि परमात्मा ने उसे असाधारण क्षमताएँ दी हैं?
2. उत्तर: परमात्मा ने मनुष्य को सुख-सौभाग्य और प्रगति के लिए असाधारण क्षमताएँ दी हैं, जिससे वह दूसरों के लिए भी सहायक बन सकता है। परंतु मनुष्य की दुर्बुद्धि या माया का भटकाव उसे लालसा, वासना और अहंता के चक्र में फँसा देता है, जिससे वह स्वयं और दूसरों के लिए समस्याएँ व विडंबनाएँ ही रचता रह जाता है। इस स्वनिर्मित दुर्गति से निकलने के लिए समर्थ सहायक और पात्रता की आवश्यकता होती है।
3. प्रश्न: किसी भी कार्य में सफलता के लिए आवश्यक 'पात्रता' के कौन से तीन नियम बताए गए हैं?
4. उत्तर: सफलता के लिए पात्रता के तीन नियम हैं: (१) उत्साह और स्फूर्ति भरी श्रमशीलता, (२) तन्मयता, तत्परता भरी अभिरुचि, और (३) उत्कृष्टता के लिए गहरी लगन और ललक। जहाँ ये तीनों गुण सम्मिलित रूप से पाए जाते हैं, वहाँ सफलता तक पहुँचने का अवसर मिलता है। ईश्वर की अनुकम्पा भी ऐसे ही लोगों पर बरसती है, जो अपनी योग्यता सिद्ध करते हैं।
5. प्रश्न: वर्तमान समय में ईश्वर किस प्रकार के व्यक्तियों की खोज कर रहा है और क्यों?
6. उत्तर: वर्तमान समय में, निर्माणकर्ता को बड़ी बेचैनी से सत्पात्रों की खोजबीन करनी पड़ रही है। यह आपत्तिकाल है और नियामक का कार्य रुका पड़ा है। जैसी सड़ी-गली परिस्थितियाँ आज हैं, वैसी अधिक दिनों तक नहीं रहने दी जा सकतीं, इसलिए बदलाव में बड़ी भूमिका निभाने के लिए योग्य व्यक्ति (सत्पात्र) तेजी से ढूँढे जा रहे हैं। ऐसे लोगों को विशेष अनुदान और उपहार अविलम्ब मिलने वाले हैं।
7. प्रश्न: मनुष्य की कौन सी कमजोरियाँ उसे समर्थ होते हुए भी बड़े कार्य करने से रोकती हैं?
8. उत्तर: मनुष्य की कृपणता, कायरता और संकीर्णता ऐसी अभिशाप हैं जो उसे समर्थ रहते हुए भी कुछ करने नहीं देतीं, और वह कठिनाइयों के बहाने गढ़ लेता है। गीता में इसी को धिक्कारते हुए कहा गया है कि हृदय की क्षुद्र दुर्बलता को त्यागकर खड़े हो जाओ ("क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं त्यक्त्वं तिष्ठ परंतप")। इस कमजोरी को छोड़ने पर ही व्यक्ति आदर्शवादी उदारता के बल पर महामानवों की पंक्ति में बैठ सकता है।
-

अध्याय 7: यह समय चूकने का है नहीं (स्रोत अनुच्छेद:,,,,,,)

1. प्रश्न: सामान्य भक्तजनों और भगवान् के बीच के संबंध में वर्तमान समय की क्या विशेषता बताई गई है?
2. उत्तर: सामान्यतः भक्तजन भगवान् को पुकारते हैं और उनकी सहायता के लिए गिड़गिड़ाते हैं। परंतु वर्तमान में ऐसे समय आए हैं, जब भगवान् स्वयं भक्तजनों से आवश्यक याचना करते हैं और बदले में उन्हें इतना महत्त्व देते हैं, जो उनके अपने महत्त्व से भी बढ़-चढ़कर होता है। हनुमान, केवट और जटायु के उदाहरण दिए गए हैं, जहाँ भगवान् ने उनसे सहायता माँगी और उन्हें असाधारण श्रेय दिया।
3. प्रश्न: अर्जुन और सुदामा के उदाहरणों से भगवान् के साथ संबंधों की किस परंपरा को दर्शाया गया है?
4. उत्तर: महाभारत में भगवान् कृष्ण ने अर्जुन की कमजोरी पढ़ी और उसे महाभारत में युद्ध के लिए दबाव डाला, ताकि उसे श्रेय और यश मिल सके। इसी तरह, सुदामा जब चावल की पोटली देने में सकुचा रहे थे, तो भगवान् कृष्ण ने उसे बलपूर्वक लेकर, पात्रता परखने के बाद ही सुदामापुरी को द्वारिकापुरी में रूपांतरित किया। इन प्रसंगों से यह परम्परा स्थापित होती है कि पात्रता जाँचने के बाद ही किसी को कुछ महत्त्वपूर्ण प्राप्त होता है, और भगवान् को छलना संभव नहीं है।
5. प्रश्न: युग परिवर्तन के इस समय को 'परीक्षा की घड़ी' क्यों कहा गया है?
6. उत्तर: युग परिवर्तन का यह समय आदर्शवादी कठोर सैनिकों के लिए परीक्षा की घड़ी है। इसमें पुराना कचरा हटता है और नवीनता के सरंजाम जुटते हैं, जो महान परिवर्तन और महाक्रान्ति की वेला है। इस समय में कायर, लोभी और डरपोक लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है। यदि योद्धा इस समय की महत्ता को नहीं समझते और प्रमाद करते हैं, तो उन्हें और पूरे देश को परास्त होना पड़ेगा, जिस पर रोष ही बरसेगा।
7. प्रश्न: इस विशेष समय को क्यों नहीं चूकना चाहिए और जो इसका सदुपयोग करते हैं, उन्हें क्या मिलता है?
8. उत्तर: यह ऐसा विशेष समय है जैसा हजारों-लाखों वर्षों बाद कभी एक बार आता है। गांधी के सत्याग्रही या बुद्ध के परित्राजक बनने जैसे अवसर समय निकल जाने पर दोबारा नहीं मिलते। यह प्रभातकाल का ब्रह्ममुहूर्त है, जिसमें मनुष्य का भाग्य और भविष्य नए सिरे से लिखा और गढ़ा जा रहा है। जो इसका सदुपयोग कर लेते हैं, वे अपने आपको सदा-सर्वदा के लिए अजर-अमर बना लेते हैं, जबकि चूक जाने वाले हमेशा पछताते रहते हैं।

अध्याय 8: उठाने वाले के साथ जुड़ें (स्रोत अनुच्छेद:,,,,,,)

1. प्रश्न: 'नव निर्माण' को तीव्र सरिता-प्रवाह क्यों कहा गया है और इसमें जुड़ने का क्या लाभ है?
2. उत्तर: 'नव निर्माण' को तीव्र सरिता-प्रवाह इसलिए कहा गया है क्योंकि यह भगवान् की प्रेरणा और उनके मार्गदर्शन में चल रहा है। इसकी धारा का आश्रय पकड़ लेने के बाद कोई भी व्यक्ति कहीं से कहीं पहुँच सकता है, जैसे तूफान के साथ उड़ने वाले पत्ते आसमान चूमते हैं या दुबली बेल ऊँचे पेड़ का आसरा लेकर उतनी ही ऊँची चढ़ जाती है। यह महाकाल की योजना है और इसका विस्तार सुनिश्चित है।
3. प्रश्न: 'नव निर्माण' कार्य में भाग लेने के लिए कितना समय देने की आवश्यकता है और इसका क्या परिणाम हो सकता है?
4. उत्तर: 'नव निर्माण' कार्य के लिए घर-गृहस्थी या काम-धंधा छोड़कर साधुओं की तरह पूरा समय लगाने की आवश्यकता नहीं है। यह ऐसा कार्य है, जिसके लिए नित्य दो घंटे लगाते रहने भर से असाधारण प्रगति संभव है। लगन हो तो कुछ घंटे ही परमार्थ प्रयोजन में लगा देने से इतना अधिक परिणाम सामने आ सकता है, जिसे आदरणीय, अनुकरणीय और अभिनन्दनीय कहा जा सके।
5. प्रश्न: 'युगसन्धि महापुरश्चरण' के लक्ष्य में 'प्रज्ञा परिवार' के सदस्यों की भूमिका क्या है और इसका अनुमानित प्रभाव क्या है?
6. उत्तर: 'प्रज्ञा परिवार' के पाँच लाख परिजनों में से, एक लाख जीवन्त-वरिष्ठों को अग्रदूतों की भूमिका के लिए छाँटा जा रहा है। उन्हें प्रतिदिन पाँच-दस परिचितों को इक्कीसवीं सदी संबंधी पुस्तकें पढ़ाना-सुनाना है, जिसके लिए एक-दो घंटे का समयदान देना होगा। इस क्रम से एक लाख परिजनों द्वारा पाँच वर्षों में ९ करोड़ व्यक्तियों को युग चेतना से अनुप्राणित किया जा सकेगा, और अधिक पुरुषार्थ से यह संख्या १८ करोड़ तक पहुँच सकती है।
7. प्रश्न: 'युग चेतना अभियान' को बढ़ाने के लिए परिजनों को कौन से दैनिक कार्य सुपुर्द किए गए हैं?
8. उत्तर: 'युग चेतना अभियान' को बढ़ाने के लिए परिजनों को कई दैनिक कार्य सौंपे गए हैं। इनमें १०८ बार गायत्री मंत्र का जाप, प्रातःकालीन सूर्योदय का ध्यान (शरीर को ओजस्वी, तेजस्वी बनाने का अनुभव), और उद्गम-केंद्र शान्तिकुञ्ज की मानसिक परिक्रमा कर अखण्ड लौ के दीपक से प्राण चेतना का अवधारण शामिल है। साथ ही, 'विचारक्रान्ति ज्ञानयज्ञ' के तहत इक्कीसवीं सदी संबंधी पुस्तकों का हर दिन अवगाहन करना है।
9. प्रश्न: 'युग चेतना अभियान' का अंतिम लक्ष्य और दूरगामी परिणाम क्या बताया गया है?
10. उत्तर: 'युग चेतना अभियान' का अंतिम लक्ष्य है कि समूची मनुष्य जाति इसके प्रभाव क्षेत्र में आए, प्रगतिशीलता का माहौल बने और जन-जन मानवीय गरिमा के अनुरूप उत्कृष्ट आदर्शवादिता अपनाते हुए दिखाई दें। यदि पिछले शताब्दी की कुविचारों और कुकर्मों की बाढ़ को उलट दिया जाए, तो अगली शताब्दी में सदाशयता की उत्साहपूर्वक अभिवृद्धि हो सकती है, जिससे उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएँ मूर्तिमान होंगी।